Unit-(A)
B.A (Hons) Part (2)
Paper III
Psychological-research
By-Dr. Ramendra Kr. Singh
D.K. College, Dumraon

निरीक्षण तथा सहभागी निरीक्षण
(observation and Participant observation)

अनुसंधान के लिये प्रदत्तों का संकलन करना अति आवश्यक होता है। वैज्ञानिक ढंग से की गई प्रदत्त संकलन शोध की सफलता की कुंजी है। इसके लिये कई तरह के स्रोतों का सहारा लिया जाता है। प्रेक्षण भी सूचना-संग्रहण की एक प्रमुख विधि है। इसे प्राथमिक-स्रोत की श्रेणी में रखा जाता है। इसकी महत्ता को देखते हुए कहा गया है:-

"हर शोध का प्रारंभ निरीक्षण से होता है और उसका अंतिम सत्यापन भी निरीक्षण से ही होता है।" Science begins with observation and must ultimatly returns to observation for its final validation."

मानवीय व्यवहारों तथा कार्यों का, इन्द्रियों के माध्यम से अर्थात अनुभवसिद्ध (Empirical) प्रत्यक्षीकरण कर लिया जाता है तो उसे निरीक्षण अथवा प्रेक्षण कहा जाता है। शोध-वैज्ञानिक पी० भी० यंग के शब्दों में:-

"observation is delicate study through the eyes and other senses that may be used as one of the methods scrutinizing (बारीकी से की गई छानबीन) collective behaviour and complex social institutions as well as the separates units composing a totality."

अर्थात "निरीक्षण आँखों के द्वारा तार्किक ढंग से सामूहिक व्यवहारों तथा जटिल सामाजिक संस्थाओं की पूर्ण रचना करनेवाली पृथक इकाईयों की पद्धति है।"

मोसर महोदय ने प्रेक्षण को "अनुसंधान की एक शास्त्रीय विधि" माना है। कर्लिंगर ने इसे परिभाषित करते हुये कहा है:-
"सभी प्रकार के प्रेक्षण अंततः विशेष घटनाओं का विशेष समूहों में वर्गीकरण होते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं का गहन अध्ययन करने पर प्रेक्षण की निम्नलिखित विशेषताएँ उभर कर सामने आती हैं:-

(i) प्रेक्षण अनुसंधान के लिये तथ्य-संग्रह की एक प्राथमिक स्रोत है।

(ii) प्रेक्षण वैज्ञानिक विकास का आधार है।

(iii) किसी भी शोध का प्रारंभ प्रेक्षण से होता है।

(iv) शोध का सत्यापन भी प्रेक्षण से ही होता है।

(v) इससे मानव की जटिल सामूहिक व्यवहारों का अध्ययन भी संभव है।

(vi) इसके माध्यम से समाज में घटित घटनाओं एवं ~~सूक्ष्म~~ सामूहिक व्यवहारों का आँखो देखी प्रत्यक्षण होता है।

(vii) इस प्रणाली से शोध के लिये पर्याप्त एवं विस्तृत सामग्रियाँ उपलब्ध हो जाती हैं।

प्रेक्षण के प्रकार

(क) अनियंत्रित निरीक्षण
(ख) नियंत्रित निरीक्षण

(क) अनियंत्रित निरीक्षण:
(i) सहभागी निरीक्षण
(ii) असहभागी निरीक्षण

अनियंत्रित निरीक्षण से तात्पर्य निरीक्षण के उस प्रारूप से है जो स्वाभाविक परिस्थिति में घटित घटनाओं का अध्ययन करता है। इसमें शोधकर्ता का Variable पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। इस प्रारूप में शोधकर्ता किसी प्रकार का Manipulation नहीं कर पाता है।

दूसरी तरफ नियंत्रित निरीक्षण में Variable & researcher दोनों पर नियंत्रण का होता है। इसमें Variable के साथ-साथ शोधकर्ता के पूर्वाग्रह, मनोवृत्ति आदि को भी ~~नियंत्रित~~ प्रभावशून्य बनाने का प्रयास किया जाता है

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनियंत्रित एवं नियंत्रित निरीक्षण एक दूसरे के पूरक हैं। हम Participant observ-ation का मूल्यांकन उसके गुण दोषों के आधार पर करेंगे।-

(1) सहभागी निरीक्षण Participant observation

सर्वप्रथम LINDSMAN (1924) ने 'सहभागी निरीक्षण' शब्द का प्रयोग किया। निरीक्षण के इस प्रारूप में शोधकर्ता निरीक्षण करने वाले समूह का अस्थाई सदस्य बन जाता है और उस समुदाय से घुल मिल जाता है। निरीक्षण से सम्बन्धित सदस्यों को अपने विश्वास में लेकर अपने शोध-समस्या से सम्बन्धित सूचनाओं को संकलित करने लगता है। सामाजिक व्यवहार कैसा होता है? उनकी क्या विशेषताएँ हैं! कौन-कौन सी व्यवहार करते हैं? आदि तरह की सूचनाओं का तटस्थ भाव से प्रेक्षण कर संकलित करता है। यहाँ अनुसंधानकर्ता घटित सामुदायिक घटनाओं का तटस्थ भाव से वास्तविक वातावरण में आँखों देखी अवलोकन कर लेता है। गुड एवं हैट के अनुसार:-

"सहभागी अवलोकन में अध्ययनकर्ता सहभागी कहलाने का अधिकारी उस समय हो जाता है, जब उसे समूह के सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।" सहभागी निरीक्षण में अध्ययनकर्ता को उस समूह की मूल्यों (values) एवं वर्जनाओं (Taboos) का पूरा ज्ञान होना चाहिए।

MERITS OF PARTICIPANT OBSERVATION :-

(i) प्रत्यक्ष अध्ययन :- इस प्रणाली की प्रथम विशेषता यह है कि इसके द्वारा तथ्यों का प्रत्यक्ष रूप से संग्रह हो जाता है। अतः प्राप्त तथ्यों या सूचनाओं में उच्च स्तरीय वैधता पाई जाती है।

(ii) वास्तविक अध्ययन :- इसमें शोधकर्ता संबंधित शोध समूह से घुल मिल जाता है, जिससे वे उसको अपना हितैषी समझते हैं और पूरा सहयोग करते हैं; जिससे उनके द्वारा

सदस्य बनना पड़ता है जिससे भावनात्मक लगाव हो जाता है। इसके फलस्वरूप तटस्थ वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में कठिनाइयाँ आती हैं। गुड एवं हैट के अनुसार:-

"जितना अधिक प्रेक्षक भावात्मक जुड़ाव से बंधता है उतना ही वैज्ञानिकता और उसकी वैयक्तिकता (Individuality) नष्ट हो जाती है, जो उसकी एकमात्र पूँजी होती है।"

स्पष्ट है यह इस विधि की भयानक दोष है।

(ii) पूर्ण सहभागिता संभव नहीं:- अनेक मनोवैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं का कहना है कि इस विधि से सूचना संग्रह के लिये निरीक्षण में पूर्ण सहभागिता संभव नहीं है। अध्ययनकर्ता अपनी वैयक्तिक भिन्नता तथा सीमाओं के कारण किसी अन्य समूह से पूर्णतः घुलमिल नहीं पाता है क्योंकि यह सम्बन्धन अस्थाई स्वरूप की होती है। समूह के सदस्य भी पूर्णतः घुलते मिलते नहीं है। ऐसी हालत व्यवहारों के प्रकटीकरण में कृत्रिमता आ ही जाती है।

(iii) बड़े समूह के लिये उपर्युक्त नहीं:- इस विधि से अध्ययन केवल छोटे समूह पर ही संभव है। बड़े समूह में सहभागिता आसान नहीं है। ~~और~~ सभी स्तरों पर समूह व्यवहार का अध्ययन भी संभव नहीं है। जैसे - अपराधी व्यक्तियों के समूह, तस्करों के समूह, नशील द्रव्यों के तस्करों का समूह में Participant Observation कठिन कार्य है।

(iv) खर्चीली प्रणाली:- सूचना संग्रह की इस प्रणाली को एक खर्चीली प्रणाली माना जाता है। इसमें एक व्यवहारिक दोष यह है कि इसमें समय, श्रम, धन, साधन सबका अपव्यय होता है जो एक साधारण अनुसंधानकर्ता के लिए वहन करना कठिन हो जाता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'प्रेक्षण' मनोवैज्ञानिक शोध के लिये प्रदत्त-संकलन की एक महत्वपूर्ण विधि है। इसने मनोविज्ञान को वैज्ञानिक आधार देने में अहम् भूमिका निभाई है। इसके कई प्रारूप हैं जिसमें Participant observation काफी सफल विधि है जिसके माध्यम से कैसे समूह व्यवहारों एवं सामुदायिक घटनाओं का अध्ययन भी संभव है जिसका अन्य किसी स्रोत से अध्ययन संभव नहीं है। जनजातियों के व्यवहारों आदि का अध्ययन संभव है। इसमें आँखों देखी प्रेक्षण होता है जिससे वैधता एवं विश्वसनीयता बढ़ जाती है।

By - Dr. Ramendra Kr. Singh
Dept of Psychology,
D.K. College,
Dumraon